Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 8, August - 2026

DOIs:10.2018/SS/202608006 --:-- Research Paper / Article / Review

श्री अरविन्द घोष और डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के दार्शनिक और शैक्षिक दर्शन का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

प्रियंका देउपा[1], प्रो॰ रिजवाना सिद्दीकी[2]
[1]शोधार्थी, शिक्षा संकाय, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, 263601.
ईमेल - deopapriyanka2020@gmail.com
[2]संकायाध्यक्ष/विभागाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, 263601.
ईमेल – rizwanasiddiqui133@gmail.com

सारांशः भारत के आधुनिक दर्शन और शिक्षा चिंतन को आकार और दिशा देने मे श्री अरविन्द घोष और डॉ॰ राधाकृष्णन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। दोनों विचारकों ने भारतीय परंपरा को आधुनिकता के साथ जोड़ते हुए शिक्षा को आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टिकोण प्रदान किया। श्री अरविन्द घोष एक महान् दार्शनिक शिक्षाविद, योगी तथा क्रांतिकारी रहे हैं। वहीं डॉ॰ सर्वपल्ली भी एक महान दार्शनिक शिक्षाविद और राजनेता रहे हैं। दोनों का ही व्यक्तित्व अपने आप में अद्वितीय है, जो कि शिक्षा के प्रति एक अनूठी छाप छोड़ता है। श्री अरविन्द घोष और डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शैक्षिक दर्शन से भारतीय शिक्षा प्रणाली की आध्यात्मिक नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को गहराई से समझा जा सकता है। तथा इनके शैक्षिक दर्शन, शैक्षिक विचारों ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को एक विशेष दिशा तथा उन्नति की राह प्रदान की। प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीय स्रोतों पर आधारित है। इसमें ऐतिहासिक और वर्णनात्मक विधि प्रयुक्त की गई है।

मुख्य शब्दः श्री अरविन्द घोष, डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन, शिक्षा दर्शन, आध्यात्म, आदर्शवादी, यथार्थवादी, मूल्य ।

1. प्रस्तावनाः

श्री अरविन्द घोष का जन्म 15 अगस्त, 1872 को कोलकाता के एक संपन्न परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम डॉ॰ कृष्ण घोष और माता का नाम श्रीमती सर्वलता देवी था। युवावस्था में ये एक क्रांतिकारी के रूप में उभर कर आए परन्तु बाद में एक योगी बन गए। इन्होंने पांडिचेरी में एक आश्रम स्थापित किया। इन्होंने जेल में रहकर भी दर्शन, गीता, उपनिषद, वेद आदि का अध्ययन किया और मौलिक लेख लिखे। अध्यात्मवादी के साथ-साथ विश्व में इन्हें पांडिचेरी संत के रूप में भी प्रसिद्धि मिली। वे कवि होने के साथ-साथ एक योग्य शिक्षक भी थे। उन्होंने कहा कि "ईश्वरीय चेतना में विकास करना हमारे लिए योग का संपूर्ण अर्थ है", "एक अनिवार्य मन परिवर्तन", "ईश्वर ही सब कुछ है"। इस ज्ञान ने उनके समस्त जीवन की दिशा बदल दी उनके ज्ञान की धारा अंत तक बहती रही, जब तक कि भारत और विश्व के मनुष्य को सर्वोच्च स्तर तक पहुंचा सके। उनकी दार्शनिक मासिक पत्रिकाएँ आर्य, कर्मयोगिनी, युगांतर एवं पुस्तकें लाइफ डिवाइन, सुपरमैन आदि हैं तथा महाकाव्य सावित्री जिसे लिखने में चार दशकों से भी ज्यादा समय लगा था।

डॉ॰ राधाकृष्णन का जन्म 5 सितम्बर 1888 को तत्कालीन मद्रास प्रेसीडेन्सी के चित्तूर जिले स्थित तिरूत्तनी ग्राम में एक तेलुगुभाषी ब्राह्मण परिवार में हुआ। वे भारत के उपराष्ट्रपति एवं राष्ट्रपति भी रहे हैं। वह संपूर्ण विश्व को एक विद्यालय मानते थे। बचपन में वह मेधावी एवं कुशाग्र बुद्धि के बालक थे। उनका मानना था कि संपूर्ण जगत में शिक्षा ही ऐसी वस्तु है, जो मानव मस्तिष्क का सदुपयोग कर समस्त मानसिक क्रियाओं को धरातल पर लाने का कार्य करती है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के द्वारा ही मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है। वह एक उत्कृष्ट शिक्षक मार्गदर्शक एवं शिक्षाविद रहे हैं। उन्होंने अपने प्रखर बौद्धिक संवादों, भाषणों तथा ग्रंथों के माध्यम से भारतीय दर्शन को संवाहक के रूप में पाश्चात्य लोगों के लिए सरल बनाया। उनके अनुसार भारतीय संस्कृति धर्म, ज्ञान, नैतिकता और सत्यता पर केंद्रित है, जिससे व्यक्ति को सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है। उन्होंने "इंडियन फिलॉसफी" और "लाइब्रेरी ऑफ़

फिलॉसफी" आदि पुस्तकें लिखीं। उन्होंने लाइब्रेरी ऑफ़ फिलॉसफी नामक पुस्तक में भारतीय दर्शन को एक क्रमबद्ध तथा पठनीय सामग्री के रूप में प्रस्तुत किया। जिसके लिए विश्वविख्यात विद्वानों ने इस उपलब्धि को एक अत्यंत विद्वान व्यक्ति की कृति कहकर सम्मानित किया।

2.शोध की आवश्यकता:

शैक्षणिक अनुसंधान के क्षेत्र में शिक्षा प्रणाली के सुधारात्मक विकास हेतु भिन्न-भिन्न समय में अनेकों शिक्षाशास्त्रियों के दार्शनिक विचारों की समीक्षा की जाती रही है। आज के भौतिकवादी युग में शिक्षा और दर्शन का संबंध टूटता जा रहा है। इसलिए हमें उन विचारकों के दृष्टिकोण को समझने की आवश्यकता है, जिससे महान दार्शनिकों के आध्यात्मिक और नैतिक विचारों का शिक्षा और समाज के विकास में सकारात्मक प्रभाव पड़े, तथा शैक्षिक विधियाँ एवं रणनीतियाँ बनाने मे सहायता मिल सके। जिससे शिक्षा की समग्र गुणवत्ता बनी रहे, विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो और वह शिक्षा का सदुपयोग करके एक उन्नत समाज या राष्ट्र का निर्माण कर सकें।

3.शोध के उद्देश्यः

1. श्री अरविन्द घोष और डॉ॰ राधाकृष्णन के दार्शनिक दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. श्री अरविन्द और डॉ॰ राधाकृष्णन के शैक्षिक दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
3. श्री अरविन्द घोष और डॉ॰ राधाकृष्णन के शैक्षिक दर्शन का वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

4.शोध पद्धति:

शोध का विषय ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। अध्ययन में ऐतिहासिक लेख दस्तावेजों, प्रमाण विधि, विश्लेषणात्मक विधि तथा वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। जहां श्री अरविन्द घोष एवं डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन परिचय, कृतियों तथा शैक्षिक दर्शन को जानने के लिए ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया गया है, वहीं मूल्यों तथा शिक्षा संबंधी विचारों का उल्लेख करने हेतु विश्लेषणात्मक तथा विवेचनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

5.श्री अरविन्द घोष का दर्शन एवं शैक्षिक दृष्टिकोणः

श्री अरविन्द भारत के एक महान दार्शनिक कवि, योगी और राष्ट्रवादी थे। उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान भारतीय संस्कृति और शिक्षा के पुनर्जागरण में है। उनके शैक्षिक विचारों का आधार भारतीय दर्शन, वेदान्त, योग और मानव मनोचेतना के विकास पर है। उन्होंने शिक्षा को एक आध्यात्मिक और राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया माना। उनका दर्शन अत्यन्त व्यापक आध्यात्मिक और जीवन को पूर्ण रूप से रूपांतरित करने वाला है। उनके दर्शन को "एकीकृत अद्वैतवाद" या "पूर्णयोग" के नाम से भी जाना जाता है। वे मानते थे कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में चेतना का विकास होना आवश्यक है। श्री अरविन्द का अद्वैतवाद शंकराचार्य की मायावती अद्वैत से भिन्न हैं। वे मानते थे कि संसार एक माया नहीं है बल्कि ईश्वर की अभिव्यक्ति है। उसे त्यागने के बजाय उसमें रहते हुए उसे दिव्य बनाना ही उनका उद्देश्य था।

6.श्री अरविंद के दर्शन की प्रमुख विशेषताएँः

- **ब्रह्म की परिकल्पनाः** अरविन्द के अनुसार ब्रह्म न केवल निर्गुण है, बल्कि सगुण भी है। वह न केवल साक्षी रूप है, बल्कि सृष्टि का कर्ता भी है। उनके अनुसार, सच्चिदानंद ही अंतिम सत्य है। जिसमें सत् (सत्ता), चित् (चेतना), और आनंद (आनंद) तीनों एक साथ विद्यमान हैं।
- **संपूर्ण योगः** श्री अरविन्द ने योग के सभी मार्गों कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग और राजयोग को एक साथ मिलाकर पूर्ण योग की संकल्पना दी। इसका उद्देश्य है व्यक्ति को मानव से 'दिव्य मानव' बनाना।
- **दिव्य जीवन की संकल्पना (लाइफ डिवाइन):** उनके अनुसार, आध्यात्मिकता का उद्देश्य केवल मोक्ष नहीं है, बल्कि इसी पृथवी पर दिव्य जीवन की स्थापना है। मानव जीवन में ही आध्यात्मिकता को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र (शिक्षा, राजनीति, दर्शन, कला आदि) में लाना चाहिए।

- **मानव का उद्देश्यः** श्री अरविंद के अनुसार, मानव केवल एक जैविक प्राणी नहीं, बल्कि उसका उद्देश्य है, इस पृथवी पर 'दिव्य जीवन' की स्थापना, आत्मा का पूर्ण विकास और 'सुपरमाइंड' की प्राप्ति।
- **राष्ट्रीयता और आध्यात्मिकता का समन्वयः** वे मानते थे कि राष्ट्र को उन्नति केवल राजनीतिक ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जागरण से संभव है। इसी आध्यात्मिक चिंतन से राष्ट्र को 'दिव्यत्व' देने की बात की।

7.श्री अरविंद की प्रमुख रचनाएँः

- द लाइफ डिवाइन - उनका प्रमुख दार्शनिक ग्रंथ
- सावित्री - एक महाकाव्य
- द सिंथेसिस ऑफ योगा - योग पर उनकी पुस्तक
- द ह्यूमन साइकिल - मानव समाज के विकास की प्रक्रिया
- एसेज आन द गीता - गीता पर उनके व्याख्यान

8.श्री अरविंद का शैक्षिक दृष्टिकोणः

- **शिक्षा का उद्देश्यः** श्री अरविंद के अनुसार, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य दिव्यता का विकास करना है, जो हर व्यक्ति के भीतर निहित होती है। उनके अनुसार, शिक्षा केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि आत्मा का पोषण करके इसे विकसित करने का काम करती है। शिक्षा एक प्रकार का आत्म-विकास और आत्म-प्रकाश है।
- **पूर्ण व्यक्ति का विकास / समग्र शिक्षाः** श्री अरविंद ने समग्र शिक्षा की अवधारणा दी, जिसके पाँच आवश्यक सिद्धांत हैंः
  i. शारीरिक शिक्षा
  ii. प्राणिक/जीवन शिक्षा
  iii. मानसिक शिक्षा
  iv. बौद्धिक शिक्षा/विवेकात्मक शिक्षा
  v. आध्यात्मिक शिक्षा
- **भारतीय संस्कृति तथा आध्यात्मिक शिक्षाः** श्री अरविंद के भारतीय राष्ट्रवाद में धर्म और योग का विशेष महत्व है। उनका मानना था कि भारतीय शिक्षा प्रणाली को भारतीय परंपरा के साथ जोड़ना चाहिए।
- **गुरु शिष्य की भूमिकाः** श्री अरविन्द के अनुसार गुरु केवल ज्ञान देने वाला नहीं वरन मार्गदर्शक और प्रेरक होता है। उनका मानना था कि, शिक्षक को विद्यार्थी के स्वभाव, रुचियों एवं योग्यता के अनुसार विद्यार्थी का मार्गदर्शन करना चाहिए। उन्होंने शिक्षा में व्यक्तिगत संपर्क और संवाद की महत्ता पर बल दिया। विद्यार्थी एक आत्मा है जो सीखने और विकसित होने की क्षमता के साथ जन्म लेता है। शिक्षा उसे पूर्णता की ओर ले जाती है।
- **मानवता और दिव्यता की शिक्षाः** शिक्षा का अंतिम लक्ष्य मानव को दिव्यत्व की ओर ले जाता है। व्यक्ति को मानवता, करुणां, निष्ठा और सेवा जैसे गुणों से युक्त बनना चाहिए।
- **स्व प्रेरणा एवं स्व निर्देशनः** श्री अरविन्द ने स्व-प्रेरित शिक्षा को प्रोत्साहित किया। प्रत्येक बालक के भीतर एक दिव्य शक्ति होती है, जो उनका मार्गदर्शन करती है। शिक्षक को केवल उस शक्ति को जगाना होता है।

9.डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन का दर्शन एवं शैक्षिक दृष्टिकोणः

डॉ॰ राधाकृष्णन का शैक्षिक दृष्टिकोण उनके दार्शनिक चिंतन से अत्यंत गहराई से जुड़ा हुआ है। वे मानते थे कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं बल्कि आत्मा की शुद्धि और चरित्र निर्माण का मार्ग है। उनका शिक्षा दर्शन भारतीय आध्यात्म, मानवतावाद, नैतिकता, भारतीय संस्कृति, आदर्शवाद तथा भारतीय वेदांत पर आधारित था, विशेषकर अद्वैत वेदांत का आधुनिक और व्यावहारिक रूप। उनके शिक्षण सिद्धांतों में नैतिकता, मानवता, आध्यात्मिकता और ज्ञान का समावेश प्रमुख है। वे भारतीय दर्शन को पश्चिमी दृष्टिकोण से समझाने और उसे विश्व में प्रतिष्ठित करने के लिए प्रसिद्ध हैं। डॉ॰ राधाकृष्णन शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत के अनुयायी

थे। उन्होंने इसे एक आत्मीय अनुभव के रूप में परिभाषित किया। उनके अनुसार सत्य को केवल तर्क से नहीं बल्कि प्रत्यक्ष आत्मानुभव से जाना जा सकता है। उन्होंने कहा कि ईश्वर एक अनुभव है, कोई सैद्धांतिक धारणा नहीं।

10.डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के दर्शन की प्रमुख विशेषताएँ:

- **आत्मा और ब्रह्म की एकता:** डॉ॰ राधाकृष्णन ने कहा कि प्रत्येक जीव के भीतर आत्मा है जो ब्रह्म का ही अंश है। आत्मा और ब्रह्म के बीच की दूरी केवल अज्ञान (अविद्या) के कारण है।
- **धर्म की व्याख्या (सार्वभौमिक और व्यावहारिक):** डॉ॰ राधाकृष्णन धर्म को सम्प्रदायों और कर्मकांडों के ऊपर मानते थे। उनके अनुसार धर्म का सार है करुणा, आत्म अनुशासन और आत्मा की दिव्यता में विश्वास। उनका मानना था कि सभी धर्म एक ही परम सत्य की ओर अलग-अलग मार्ग हैं।
- **जीवन में आध्यात्मिक मानववाद:** राधाकृष्णन ने एक ऐसे मानवतावाद का समर्थन किया जो आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित है। उन्होंने कहा कि मनुष्य केवल शरीर और मन नहीं है, उनके भीतर दिव्यता है। और शिक्षा व समाज का कार्य इस दिव्यता को जागृत करना है। जीवन का उद्देश्य आत्मा की खोज और आत्मबोध है।
- **पश्चिमी और भारत की सांस्कृतिक समन्वय का दर्शन:** राधाकृष्णन ने भारतीय संस्कृति को धार्मिक सहिष्णुता आत्मा की खोज और विश्व बंधुत्व की संस्कृति बताया। उन्होंने पश्चिम को बताया कि भारत केवल एक धर्म प्रधान देश नहीं है बल्कि वह दार्शनिक चिंतन और आत्मबोध का महान केन्द्र रहा है। उन्होंने भारतीय दर्शन को पश्चिमी दार्शनिकों जैसे हीगल, कांट, प्लेटो आदि से तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने भारतीय दर्शन को विश्वदर्शन में स्थान दिलाने का कार्य किया।
- **शिक्षा का दार्शनिक आधार:** राधाकृष्णन मानते थे कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं बल्कि चरित्र निर्माण और आत्मा का विकास होना चाहिए। शिक्षक को समाज में आदर्श पुरुष माना जाना चाहिये।

11.डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन की प्रमुख रचनाएँ:

- इंडियन फिलॉसफी (वॉल्यूम। एंड II) - भारतीय दर्शन का गहन विश्लेषण
- द फिलॉसफी ऑफ रवींद्रनाथ टैगोर
- द हिन्दू - व्यू ऑफ़ लाइफ
- ईस्टर्न रिलीजियन एंड वेस्टर्न थॉट
- रिकवरी ऑफ़ फेथ

12.डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन का शैक्षिक दृष्टिकोण:

- **शिक्षा का उद्देश्य:** शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल आजीविका प्राप्त करना नहीं है। इसका सर्वोच्च लक्ष्य है- आत्मबोध, चरित्र निर्माण, समाज सेवा और मानवता की भावना। मानवता का समग्र विकास है- शिक्षा से व्यक्ति में नैतिकता सत्यता करुणा अनुशासन और आत्मा की जागरुकता उत्पन्न होनी चाहिए।
- **आध्यात्मिकता और धर्म:** उन्होंने आध्यात्मिक मूल्यों पर बल दिया। बौद्धिक विकास के साथ-साथ नैतिक और आत्मिक विकास भी जरूरी है। उनके अनुसार शिक्षक को एक योगी की तरह होना चाहिए जो विद्यार्थी के भीतर की दिव्यता को पहचान सके।
- **शिक्षक का स्थान:** शिक्षक को एक गुरु के रूप में देखा जाना चाहिये, जो केवल विषय ज्ञान नहीं देता बल्कि चरित्र निर्माण और मार्गदर्शन करता है। शिक्षक को खुद एक आदर्श व्यक्तित्व बनकर छात्रों के लिए प्रेरणा स्रोत बनना चाहिए। वे गुरु की भारतीय परंपरा को अत्यंत महत्व देते थे।
- **विद्यार्थियों के अन्दर आत्मनिरीक्षण और स्वाध्याय की भावना:** वे चाहते थे कि विद्यार्थी स्वयं सोचें, प्रश्न करें, विश्लेषण करें और आत्मनिरीक्षण करें। उनका कहना था कि मस्तिष्क को स्वतंत्र बनाना चाहिए न कि उसे रटने वाला यन्त्र बनाना।

- **मानवतावादी शिक्षाः** डॉ॰ राधाकृष्णन ने शिक्षा को मानव कल्याण का माध्यम माना। शिक्षा से व्यक्ति में सर्वधर्म समभाव, सहिष्णुता, प्रेम और सेवा भाव उत्पन्न होनी चाहिए। वे शिक्षा को केवल बौद्धिक क्रिया नहीं बल्कि मनुष्य के भीतर छिपी मानवीय संवेदनाओं को जागृत करने वाली क्रिया मानते थे। वे शिक्षा को धर्म, जाति, रंग या राष्ट्रीय सीमाओं से परे मानते थे।
- **भारतीय संस्कृति और सामाजिक उत्तरदायित्वः** वे आधुनिक शिक्षा में भारतीय दर्शन, योग, ध्यान और वेदांत जैसी परंपराओं को शामिल करने के पक्ष में थे। शिक्षा को अपनी संस्कृति की जड़ों से जोड़ना आवश्यक है। उनका मानना था कि शिक्षित व्यक्ति का कर्तव्य समाज की सेवा करना है। शिक्षा से समाज में नैतिकता, जागरूकता, सामाजिक समरसता और विकास होना चाहिए।
- पूर्व और पश्चिम की शिक्षा प्रणाली का समन्वयः डॉ॰ राधाकृष्णन चाहते थे कि शिक्षा से विद्यार्थी वैश्विक नागरिक बने। वे शिक्षा को विश्व बंधुत्व और शांति की भावना से जोड़ते थे। उन्होंने भारत की पारंपरिक शिक्षा प्रणाली की श्रेष्ठता को माना लेकिन पश्चिम की वैज्ञानिक सोच और विश्लेषण प्रवृत्ति को भी स्वीकार किया।

13.श्री अरविन्द और डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शैक्षिक दर्शन का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययनः

आज के वैश्वीकरण, नैतिक पतन, मानसिक तनाव और भौतिकवाद के दौर में शिक्षा केवल रोजगार का साधन बन गई हैं। ऐसे समय में श्री अरविन्द और डॉ॰ राधाकृष्णन के शैक्षिक दर्शन हमें आत्म चेतना, नैतिक मूल्यों और संपूर्ण व्यक्तित्व विकास की दिशा में मार्गदर्शन देते हैं। उनका दर्शन आध्यात्मिक मानवतावाद और भारतीय संस्कृति पर आधारित शिक्षा का पक्षधर है, जिसकी प्रासंगिकता आज और भी अधिक हो गई है। नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकताः आज की शिक्षा में मूल्यनिष्ठता की कमी है। नैतिकता का संकट स्पष्ट है। भ्रष्टाचार, हिंसा, नैतिक पतन आदि बढ़ते जा रहे हैं। श्री अरविन्द का बल था, आत्मिक चेतना/दिव्यता के जागरण पर। राधाकृष्ण का बल था—नैतिकता, मानवता और आत्मबोध पर। इसलिए बढ़ती हुई हिंसा भ्रष्टाचार और तनाव से निपटने के लिए शिक्षा में ध्यान, योग, चरित्र निर्माण और नैतिक मूल्यों का समावेश आवश्यक है। व्यक्तित्व का समग्र विकासः आज की शिक्षा में प्रतियोगिता अंक प्रधान हो गई है, परंतु मनुष्य का समग्र विकास उपेक्षित है। अरविन्द का पूर्ण योग शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक विकास की बात करता है। राधाकृष्णन कहते हैं, "शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण मानव बनना है विशेषज्ञ नहीं"। ये दोनों दृष्टिकोण एन॰ ई॰ पी॰ 2020 (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) के उद्देश्य से मेल खाते हैं।
शिक्षक की वर्तमान भूमिकाः आज शिक्षक केवल सूचना प्रदाता बनकर रह गया है। जबकि अरविन्द के अनुसार शिक्षक को शिष्य की आत्मा जागृत करने वाला होना चाहिए। राधाकृष्णन शिक्षक को राष्ट्र निर्माता और मानवता का प्रेरक मानते थे। वर्तमान में जब शिक्षा ऑनलाइन, ए॰आई॰ और स्मार्ट क्लासेज पर केंद्रित हो रही है, तब भी संवेदनशील और प्रेरणादायक शिक्षक की आवश्यकता बनी हुई है। भारतीय संस्कृति और वैश्विक दृष्टि का संतुलनः वर्तमान शिक्षा में पाश्चात्य प्रभाव अधिक है, जिससे छात्र भारतीय संस्कृति और मूल्यों से हटते जा रहे हैं। श्री अरविन्द और डॉ॰ राधाकृष्णन दोनों ने भारतीय मूल्यों को वैश्विक सन्दर्भ में प्रस्तुत किया। अतः आज की शिक्षा में इन दोनों के दर्शन से सांस्कृतिक अस्मिता और वैश्विक समझ का समन्वय संभव है।

14.श्री अरविन्द और डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनकी वर्तमान संदर्भ में उपयोगिताः

विधियाँ:

इस शोध में गुणात्मक, ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है। श्री अरविन्द के जीवन-दर्शन तथा डॉ॰ राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों का विवेचन ऐतिहासिक पद्धति से किया गया है ताकि उनके विचारों को उनके समय और परिस्थिति में समझा जा सके। तुलनात्मक पद्धति द्वारा दोनों विचारकों के विचारों की समानताओं और भिन्नताओं का अध्ययन किया गया। श्री अरविन्द ने शिक्षा को आत्म-विकास और आध्यात्मिक साधना का साधन माना, जबकि डॉ॰ राधाकृष्णन ने शिक्षा को नैतिकता और संस्कृति से जोड़ा। आज भी इन विधियों का प्रयोग विद्यार्थियों की आंतरिक क्षमताओं को पहचानने तथा शिक्षा को सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ने के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

पाठ्यक्रम:

श्री अरविन्द के अनुसार पाठ्यक्रम का उद्देश्य आत्मा की उन्नति और दिव्यता की अभिव्यक्ति है। उनके मतानुसार पाठ्यक्रम में अध्यात्म, संस्कृति, योग तथा चरित्र निर्माण पर विशेष बल होना चाहिए। डॉ॰ राधाकृष्णन का मत था कि पाठ्यक्रम में दर्शनशास्त्र,

नैतिक शिक्षा, भारतीय संस्कृति और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का संतुलन होना चाहिए। दोनों का विश्वास था कि पाठ्यक्रम केवल जानकारी देने का साधन नहीं है, बल्कि जीवन के आदर्श मूल्यों की स्थापना का मार्ग है। आज की शिक्षा नीति में मूल्य आधारित शिक्षा, योग, कला, संस्कृति और विज्ञान का समन्वय किया जा रहा है, जो अरविन्द और डॉ॰ राधाकृष्णन दोनों की सोच से मेल खाता है।

अनुशासन:

श्री अरविन्द ने अनुशासन को आत्मसंयम और साधना का रूप माना। उनका विश्वास था कि अनुशासन से आत्मा की शुद्धि होती है और उच्च आदर्शों की प्राप्ति संभव होती है। डॉ॰ राधाकृष्णन का मत था कि अनुशासन का अर्थ केवल बाहरी नियंत्रण नहीं बल्कि नैतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास है। आज विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में अनुशासन का उद्देश्य विद्यार्थियों में आत्मनियंत्रण, नैतिक आचरण और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करना है।

विद्यालय:

श्री अरविन्द ने विद्यालय को ऐसा स्थान माना जहाँ शिक्षा आत्मा और संस्कृति का पोषण करे। उन्होंने विद्यालय को एक आध्यात्मिक केन्द्र की संज्ञा दी। डॉ॰ राधाकृष्णन ने विद्यालय को समाज का लघु रूप माना और कहा कि विद्यालय में भारतीय संस्कृति और आधुनिक ज्ञान का समन्वय होना चाहिए। आज विद्यालयों में समग्र शिक्षा, मूल्य आधारित अध्ययन और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का सम्मिलन इन्हीं विचारों की प्रासंगिकता को प्रमाणित करता है।

शिक्षक:

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षक केवल जानकारी देने वाला न होकर एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक होता है। वह विद्यार्थियों की आंतरिक शक्तियों को जागृत करता है। डॉ॰ राधाकृष्णन ने शिक्षक को शिक्षा का मेरुदण्ड कहा और माना कि शिक्षक में गहन ज्ञान के साथ नैतिक मूल्यों की भी समझ होनी चाहिए। शिक्षक का आदर्श आचरण ही विद्यार्थियों के जीवन का निर्माण करता है। आज शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान देने वाले व्यक्ति की नहीं है, बल्कि वह एक मार्गदर्शक, प्रेरक और आदर्श के रूप में समाज निर्माण का कार्य करता है।

शिक्षार्थी:

श्री अरविन्द का विश्वास था कि प्रत्येक शिक्षार्थी के भीतर दिव्य शक्तियाँ छिपी होती हैं और शिक्षा का कार्य उन्हें प्रकट करना है। उन्होंने शिक्षा को आत्म-विकास का साधन माना। डॉ॰ राधाकृष्णन ने शिक्षार्थी को शिक्षा का केन्द्र माना और कहा कि शिक्षा का उद्देश्य उसे जिम्मेदार नागरिक और नैतिक व्यक्ति बनाना है। आज की शिक्षा व्यवस्था में छात्र-केंद्रित अध्ययन, स्वाध्याय और कौशल-आधारित प्रशिक्षण इन्हीं विचारों का व्यावहारिक रूप है।

मूल्यांकन:

श्री अरविन्द ने केवल अंक-प्रधान परीक्षा प्रणाली की आलोचना की और कहा कि मूल्यांकन में चरित्र, सृजनशीलता और व्यवहार का आकलन होना चाहिए। डॉ॰ राधाकृष्णन का मत था कि मूल्यांकन का आधार केवल लिखित परीक्षा नहीं बल्कि समग्र व्यक्तित्व होना चाहिए। आज निरंतर और व्यापक मूल्यांकन, परियोजना कार्य, मौखिक प्रस्तुति और व्यावहारिक परीक्षण उसी दिशा की पहल है जिसका समर्थन अरविन्द और राधाकृष्णन ने किया।

15.निष्कर्ष:

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि श्री अरविन्द और डॉ॰ राधाकृष्णन दोनों ने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का साधन न मानकर व्यक्ति और समाज के सर्वांगीण विकास का माध्यम माना। उनके अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति को नैतिक, जिम्मेदार और समाजोपयोगी नागरिक बनाना है। दोनों ही विचारकों के शैक्षिक विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भी शिक्षा को समग्र, मूल्य-आधारित और जीवनोपयोगी बनाने पर बल दिया गया है, जो उनके दृष्टिकोण से मेल खाता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि श्री अरविन्द और राधाकृष्णन के विचार आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। श्री अरविन्द घोष तथा डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन दोनों ही महान चिन्तक थे, जिन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान का माध्यम न मानकर आत्मा के विकास, समाज की उन्नति एवं राष्ट्र के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया माना जहाँ अरविंद घोष का दृष्टिकोण आध्यात्मिक उत्कृष्टता और तीव्र जीवन की स्थापना की ओर अग्रसर है। वहीं राधाकृष्ण का दृष्टिकोण नैतिक, तर्क और विश्व शांति को शिक्षा से जोड़ता है। इन दोनों महापुरुषों की विचारधाराएँ आज भी भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाशस्तंभ की तरह है, जो व्यक्ति समाज और राष्ट्र को समग्र रूप से विकास की ओर अग्रसर करती है। श्री अरविन्द और डॉ॰ राधाकृष्णन के दर्शन की वर्तमान प्रासंगिकता निर्विवाद है। वर्तमान में जब शिक्षा केवल ज्ञान केन्द्रित हो गई है तब ये विचारक हमें स्मरण कराते हैं कि "शिक्षा केवल मस्तिष्क नहीं बल्कि चरित्र का भी विकास करे"।
अतः, वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इनके विचारों को समाविष्ट करना केवल उपयोगी ही नहीं बल्कि आवश्यक भी हो गया है।

संदर्भ सूचीः-

1. गुप्ता, एस. एन. (2019). शिक्षा दर्शन और आधुनिक परिप्रेक्ष्य. विद्यार्थी प्रकाशन, जयपुर।
2. तिवारी, आर. सी. (2015). भारतीय शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. मिश्र, रामनारायण (2018). शोध पद्धति एवं शिक्षा अनुसंधान. ज्ञान भारती प्रकाशन, वाराणसी।
4. मिश्रा, कुलदीप. (2017). "डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक उपयोगों का अध्ययन", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन ऑल सब्जेक्ट्स इन मल्टी लैंग्वेजेस, 5(12), पृष्ठ 1–4।
5. लाल, एस. एवं पाण्डेय, एस. (2013). महान व्यक्तित्व (भाग–2). चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली. ISBN: 81-7011-786-1
6. वर्मा, बी. जी. (2012). महान व्यक्तित्व (भाग–3). चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली. ISBN: 81-7011-732-1
7. विकिपीडिया योगदानकर्ता. (2025). डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन. विकिपीडिया. उपलब्ध: https://hi.wikipedia.org/wiki/सर्वपल्ली_राधाकृष्णन
8. विकिपीडिया योगदानकर्ता. (2025). स्वामी विवेकानन्द. विकिपीडिया. उपलब्ध: https://hi.wikipedia.org/wiki/स्वामी_विवेकानन्द
9. शर्मा, बी. एल. (2014). भारतीय शिक्षाशास्त्र और दार्शनिक दृष्टिकोण. अटलांटिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. सिंह, के. बी. एवं सिंह, जे. (2016). "अरविन्द घोष के शिक्षा दर्शन मूल्यों की उपादेयता का अध्ययन", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 2(3), पृष्ठ 65–66।
11. सिंह, एच. एल. (2016). भारतीय शिक्षाविदों के शैक्षिक विचार. लक्ष्मी नारायण प्रकाशन, लखनऊ।
12. सिंह, के. बी. (2019). "अरविन्द घोष के कृतित्व का समीक्षात्मक अध्ययन", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज रिव्यू, 5(1), पृष्ठ 74–79।
13. हाले, ए. एन. (2011). "सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1888–1975)", इंटरनेट एनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी।